शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

काशीनाथ सिंह के कथा - साहित्य में पात्रों के सामाजिक यथार्थ के स्वरूप का विश्लेषण

आशीष कुमार तिवारी
सह.आचार्य एवं विभागध्यक्ष - हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र)

शोध सार

जिस समाज से काशीनाथ सिंह की रचनाओं के पात्र आते हैं, वे किसी काल्पनिक दुनिया के न हो कर हमारे आस-पास और पड़ोस के समाज के ही लगते हैं। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उनके पात्रों में प्रेमचन्द के पात्रों की झलक भी साफ-साफ दिखाई देती है। काशीनाथ सिंह के पात्र उनके अगल-बगल और पास-पड़ोस विचरने वाले आमजन हैं, जो कहीं चाय पीते हुए या किसी को गरियाते- लतियाते मिल जाएंगे। काशीनाथ सिंह के पात्र हाड़-मांस के बने आम आदमी हैं। जो सीधे-सादे सरल व्यक्तित्व के साथ-साथ ग्रामीणता और लंठई का दामन पकड़े रहते हैं। ऐसे पात्र काशी (बनारस) की हर गली में मिल जायेंगे, जो किसी के सामने मिमियाते, घिघियाते दृष्टिगोचर होंगे तो कहीं किसी की माँ-बहन से अपना संबंध जोड़ते नजर आयेंगे। इनके पात्र एकदम ठेठ और खाँटी हैं।

बीज शब्द

ग्रामीणता, संबंध, ठेठ, टिट फिट, कुब्बत, मिमियाते, गरज, भागोड़े।

शोध विस्तार

काशीनाथ सिंह के पात्र किसी भी तरीके से भगोड़े साबित नहीं होते। भी जीवित है। इनमें वे सारे आग्रह- पूर्वाग्रह दिखते हैं, जिनसे हमारे समाज के विविध वर्गों, जातियों, संप्रदायों तथा लिंगों का ताल्लुक है। स्थिति सिर्फ लेखक की न होकर उन तमाम लोगों की है, जो रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर शहर की ओर कूच कर गए हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- बड़ाऊँ पहने, पाँव लटकाए पान की दुकान पर बैठे तन्नी गुरु से एक आदमी बोला- किस दुनिया में हो गुरु! अमरीका रोज-रोज आदमी को चन्द्रमा पर भेज रहा है और तुम घंटे भर से पान घुला रहे हो?' मोरी में 'पच्' से पान की पीक थूककर गुरु बोले-'देखो! एक बात नोट कर लो ! चन्द्रमा हो या सूरज-भोंसड़ी के, जिसको गरज होगी, खुदै यहाँ आएगा। तन्त्री

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

गुरु टस-से-मस नहीं होंगे हियाँ से! समझे कुछ?"[1] मतलब साफ है अमेरिका अपनी जगह है और अमेरिका को जो करना है करे, उससे इन पात्रों को कुछ लेना-देना नहीं हैं। ये अपने यहाँ के महामहिम स्वयं हैं। ये पात्र आधुनिकता और उसके आधुनिक संयंत्र की ऐसी की तैसी करते नजर आते हैं। किसी का कोई डर-भय नहीं। कहीं जाने और कुछ पाने की जल्दी नहीं। जहाँ हैं, वहीं खुश हैं। काशीनाथ सिंह अपने पात्रों के बारे में अपनी राय देते हुए कहते हैं- "मेरी कहानी में आनवाले पात्र उस टूटती हुई सामंतवादी व्यवस्था में, जिससे वे निकलना चाहते हैं और जो नई बनती हुई पूंजीवादी व्यवस्था है, जिसमें वे अपने आप को बराबर टिटफिट पाते हैं, संतुष्ट नहीं हैं। इन दोनों की टकराहट की उपज हैं मेरे पात्र।"[2] लेखक की यह युक्ति और भी प्रमाणित जान पड़ती है, जब हम 'मुसइ चा', 'डुक्कूलाल', 'सुधीर घोपाल' आदि जैसे पात्रों से रू-ब-रू होते हैं-"काशीनाथ सिंह के पात्र किसी भी तरीके से भगोड़े साबित नहीं होते। अंत तक लड़ने, संघर्ष करने की कुब्वत उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है।"[3] ये पात्र सामंतवाद और पूंजीवाद की टकराहट से उत्पन्न हैं, जो न तो शहर के हो पाए हैं, न ही अपने गाँव को भुला पाए हैं। इस संदर्भ में कथाकार काशीनाथ सिंह के पात्रों के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हुए प्रफुल्ल कोलख्यान लिखते हैं-" काशीनाथ सिंह की शैली के वैशिष्ट्य पर ध्यान देने से सबसे पहले यह बात समझ में आती है कि काशीनाथ सिंह के पात्र अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ ही कथा-पटल पर आमद होते हैं।"[4]

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य के पात्र कभी भी अपनी भूमिका के किसी पक्ष के एक ही रूप में सीमित नहीं रहते हैं। जब ये पात्र शिक्षक के रूप में होते हैं, तब वह पिता,भाई,मित्र,नागरिक आदि को स्थगित रखकर या अनुपस्थित कर बना हुआ शिक्षक नहीं होता है। जब वह वर्तमान में होता है। तो वह अतीत या भविष्य को स्थगित कर वहाँ नहीं होता है। सार्वकालिकता और सार्वदेशिकता की निजगत और समष्टिगत अविकल उपस्थिति इन पात्रों की विशिष्टता है। वे कथा में वैसे ही होते हैं जैसे कि जीवन में हो सकते हैं। कहना न होगा कि कोलख्यान जी की यह उक्ति काशीनाथ सिंह के साहित्य में उनके पात्रों को संपूर्णता में देखने की चेष्टा का उदाहरण है। वास्तविकता यह है कि ये पात्र उसी समाज के लोग हैं, जिसका संबंध हमसे है। इसलिए इन पात्रों में कहीं-न-कहीं हम और हमारा समाज भी जीवित है। इनमें वे सारे आग्रह-पूर्वाग्रह दिखते हैं, जिनसे हमारे समाज के विविध वर्गों, जातियों, संप्रदायों तथा लिंगों का ताल्लुक है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

काशीनाथ सिंह अपनी रचनाओं में पात्रों का चयन करते वक्त बहुत ही सावधानी रखते हैं और इस संदर्भ में उन्होंने अपनी साहित्यिक समझदारी का सुंदर परिचय भी दिया है। जहां तक प्रश्न लैंगिक स्तर पर पात्रों के वर्गीकरण का है तो वहां परंपरागत रूप से स्त्री और पुरुष पात्र दोनों ही हैं। हिंदी पट्टी से होने के बावजूद उनकी रचनाओं में जितना महत्व पुरुष पात्रों को मिला है, संख्या में कम होने के बावजूद स्त्री पात्रों को उससे कम महत्व नहीं मिला है। काशीनाथ सिंह की रचनाओं के पात्र अपने-अपने वर्गों और स्तरों पर अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वाह बखूबी करते नजर आते हैं। काशीनाथ सिंह की कहानियों में जहाँ एक तरफ भोला बाबू, मोहन, ज्वान, सुधीर घोषाल, मुसइ चा, ढुक्कूलाल जैसे पुरुष पात्र नजर आते हैं, वहीं स्त्री-पात्रों में 'सोना', 'पायल पुरोहित' की 'पायल पुरोहित' उर्फ 'रेशमा' और 'चायघर में मृत्यु की बुआ भी आती हैं। दूसरी तरफ उनके उपन्यासों में प्रो. रघुनाथ (रेहन पर रग्धू), धर्मनाथ शाखी (कासी का अस्सी) के साथ 'महुआ चरित' की महुआ खी-पात्रों की नुमाइंदगी करती नजर आती है। काशीनाथ सिंह के पात्रों के संदर्भ में उदय प्रकाश लिखते हैं- "काशीनाथ सिंह की कहानियों के जिक्र के साथ ही कुछ चरित्र अनिवार्यतः याद आते हैं-जैसे ज्वान, सुधीर घोषाल, मुसइ चा, मास्टर डुक्कूलाल, जादू आदि- आदि। चरित्रों का निर्माण और सामाजिक मूल्यों का वैयक्तिकरण सदा से कहानी का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व रहा है।"5. इससे यह तो पता चल ही जाता है कि है कि ये चरित्र और इनकी चेतना सामाजिक यथार्थ और उस यथार्थ में उनकी स्थिति के द्वारा निर्धारित होती है लेकिन ये पात्र स्वयं में समग्र सामाजिक यथार्थ की कार्बन कॉपी नहीं होते, न ही हो सकते हैं। काशीनाथ सिंह अपने पात्र को ऐसी जगहों से उठाते हैं, जो सामाजिक यथार्थ की विडंबनाओं से भरी-पूरी हैं। उनके पात्र समस्याओं से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते हैं। तमाम विसंगतियों और विडंबनाओं से दो-चार होते हुए भी उनमें जीवन जीने की जिजीविषा है। गांव और शहर की खाई को पाटने में ये सक्षम नहीं हैं और अपने आप को हो रहे इस बदलाव के सांचे में फिट नहीं कर पा रहे हैं। इसके अलावा व्यवस्था की मार तो अलग से है ही। काशीनाथ सिंह इस दर्द को अपनी कहानी 'दलदल' में व्यक्त करते नजर आते हैं-"20-22 साल हुए, जब मैंने अपना गांव, अपनी जमीन छोड़ी थी। तब से लगातार यह शहर मुझे तोड़ने-जज्ब कर लेने की फिराक में रहा है और मैं उसके खिलाफ अपनी सुरक्षा की लड़ाई लड़ता रहा हूँ। मैंने कोशिश की थी कि अपने गंवार पैरों के नीचे सात नम्बर के जूतों के बराबर कोई ऐसा टुकड़ा बना सकूँ जो दलदल न हो, जो मुझे आश्वस्त कर सके, जिसकी नीयत खराब न हो।"[6] इस स्थिति सिर्फ लेखक की न होकर उन तमाम लोगों की है, जो रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर शहर की ओर कूच कर गए हैं।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

दूसरी तरफ 'कविता की नई तारीख' कहानी में 'सोना' का चरित्र मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन और उसकी उदात्तता का द्योतक है, जहां सोना अपने पति के साथ हर हाल में खुश रहती है और अपनी बहन के घर जाने के पश्चात् अपनी बहन और उसके पति की उलाहना को बर्दाश्त करती हुई वह अपने पति का साथ देती है और अपने घर ले चलने को कहती है। 'कविता की नई तारीख का नायक यदि उच्चवर्गीय ठाठ और उसकी मार से स्वयं को बचाने में सफल हो जाता है, तो इसमें उसकी पत्नी 'सोना' की ही सबसे बड़ी भूमिका है। इस संदर्भ में प्रो. नामवर सिंह लिखते हैं-"यही वह स्वी है, जो मेहमान नवाजी को लात मारकर अपनी टूटी-फूटी गृहस्थी में वापस लौटने के लिए पति को मजबूर कर देती है। गरज यह कि फैसला लेने में पहल करती है-ऐसा फैसला जिससे स्वयं पति डांवांडोल है।"[7] यह उस दौर की है जब हिन्दी में न तो नारी-मुक्ति आंदोलन की हवा चली थी और न 'स्त्री विमर्श' बौद्धिकों का शगल था। इस दृष्टि से 'कविता की नई तारीख की पत्नी सोना आठवें दशक की एक नई रखी है। सोना जैसी स्त्री की बदौलत ही एक सुंदर और खुशहाल गृहस्थ जीवन की नींव रखी जा सकती है, जिसमें न लोभ का स्थान है और न ही ईर्ष्या का। यदि सोना चाहती तो अपने पति को उसकी जड़ से हिला सकती थी और उनका गृहस्थ जीवन डांवांडोल हो सकता था; लेकिन सोना अपनी समझदारी का परिचय देती हुई अपने पति के साथ खड़ी नजर आती है। अपने पति की इज्जत में ही अपनी इज्जत देखती है और उसे घर चलने के लिए मजबूर कर देती है, जहाँ उसकी अपनी दुनिया है, छल-छद्म से बिल्कुल ही परे।

बनारस काशी विश्वनाथ की नगरी है, तो जाहिर सी बात है कि काशीनाथ सिंह के किन्हीं पात्रों में धर्म के प्रति आस्था और कट्टरता भी दिखाई देगी ही। परंतु कुछ ऐसे भी किरदार उनके यहाँ हमें मिलते हैं, जो धर्मांधता के विपक्ष में खड़े हैं। उनका लोकेल काशी का है, परंतु उनकी काशी नगरी में पूरे विश्व की झलक देखी जा सकती है। यहाँ देश-विदेश से आये विभिन्न प्रकार के लोगों को देखा जा सकता है, जो कमोवेश धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। परंतु यह कहना-समझना भूल होगी कि इसके अलावा बाकी तरह के लोग वहाँ नहीं रहते। वहाँ के समाज में मजदूर वर्ग, किसान वर्ग सभी हैं और काशीनाथ सिंह ने एक-एक कर सभी पर अपनी पैनी दृष्टि दौड़ाई है। बनारस की जमीन पर पैर रखने के साथ ही मंत्रोच्चार और शंखनाद के साथ 'गंगा आरती' कानों में गूंजने लगती है और उसे सुनने वाला सम्मोहित होकर उसी में रम जाता है। जब बात चलती है काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में आये धार्मिक पात्रों की, तो इस संदर्भ में सबसे बड़ा नाम आता है 'काशी का अस्सी' उपन्यास में

वर्णित धर्मनाथ शास्त्री का, जो अस्सी मोहल्ले के पंडितों के मुखिया हैं और धर्म और कर्तव्यनिष्ठा उनकी धमनियों में दौड़ती है।

धर्म के बाजार में आत्मसंघर्ष बार-बार हारता है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। आज धर्म बाजार-निर्माण एवं विक्रय-विस्तार का एक जरिया बन गया है। उक्त रचना में धर्मनाथ शास्त्री के स्वप्न में आकर शिवजी का यह कहना - "बूतिए, मैंने बहुत बर्दाश्त किया रे। जहाँ मुझे रखा है वह मंदिर है कि माचिस? हिमालय की ऊँचाइयों का पखेरू मैं, समुद्र की गहराइयों का थहैया मैं, अंतरिक्ष के सन्नाटे का ता-ता थैया मैं। तेरी मजाल कैसे हुई मुझे डिब्बा-डिब्बी में बंद करने की? अब तक मैं धतूरे और भाँग के नशे में धुत्त था। मेरा दम घुट रहा है, उस कालकोठरी में। अगर अपनी खैर चाहता है तो अभी, इसी क्षण मुझे वहाँ से उस झोंपड़ी से निकाल और ले चल खुले में- खुले आसमान में जहाँ चाँद हैं, तारे हैं, नक्षत्र-मंडल है,सूर्य है, हवा है, धूप है, बारिश है।"[8]

उठ और ले चला धर्मनाथ शास्त्री का यह स्वप्न यों ही नहीं है, बल्कि यह उनकी कमाई से जुड़ा हुआ है। यह बाजार का प्रभाव ही है कि अब शास्त्री जी भी 'पेइंग गेस्ट' रखने का मन बना चुके हैं और जहाँ शिव जी का निवास स्थान हैं, वहाँ शास्त्री जी की 'पेइंग गेस्ट' मादलेन के लिए वे पश्चिमी शैली का 'टॉयलेट' बनवा रहें हैं, जिससे उनकी भी गाड़ी कमाई हो सके। यह बाजार का प्रभाव नहीं है तो और क्या है, जो धर्मनाथ शास्त्री जैसे कट्टर ब्राह्मण को भी अपनी जड़ से हिला सकता है। ऐसे में आम व्यक्ति की क्या बिसात है? कहना न होगा कि पूंजी के आगे नतमस्तक आस्था या आस्था का छद्म काशीनाथ सिंह के यहाँ बेनक़ाब हो जाता है। काशीनाथ सिंह के कथा- साहित्य में हिंदू समाज के चारों वर्णों (फिर चाहे वे ब्राह्मण हों या क्षत्रिय, वैश्य हों या शूद्र) के किरदार मौजूद हैं। उनका कथा-साहित्य इस संदर्भ में हमारे समाज के वस्तुगत रूप का लघु संस्करण है। जैसे-जैसे समय बदला है, वैसे-वैसे सामाजिक परिदृश्य भी बदला है और समाज में रहने वाले लोगों में जागरूकता भी आयी है। शिक्षा का महत्व भी अब लोग समझते हैं, तो जाहिर सी बात है कि समाज और साहित्य में सकारात्मक बदलाव आएगा ही। काशीनाथ सिंह की कृतियों के पात्र भी पढ़े-लिखे शिक्षित समाज से संबंध रखते हैं। वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव लाना चाहते हैं। 'सिद्दीकी की सनक' शीर्षक कहानी में ऐसे ही एक पात्र की कथा है, जो समाज में बदलाव का पक्षधर है 'सिद्दीकी साहब न दार्शनिक हैं, न लेखक हैं, न पत्रकार हैं, न जासूस, लेकिन पिछले कुछ सालों से उन पर एक खब्त सवार थी। वे अखबारों में छपने वाली रोज-रोज की

वारदातें और वाकये पड़ते थे और उनमें से उस घटना को चुन लेते थे, जो उनकी समझ से आसान भी थी और पहुंच के दायरे में भी। फिर वे जानने की कोशिश करते थे कि हकीकत क्या है? व्यवस्था सिद्दीकी साहब जैसे लोगों को 'सनकी' का ही तमगा देती है। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक समाज में जहां लोगों के पास स्वयं के लिए भी समय नहीं, वे समाज के बारे में अगर सोचें तो उनको सनकी नहीं तो और क्या कहा जाएगा? सिद्दीकी साहब ऐसे ही एक शख्स हैं, जो समाज में घट रही घटनाओं की खोज खबर लेते रहते हैं। आज के समय में समाज की चिंता किसी को नहीं रह गई है। सब अपने आप में व्यस्त हैं। ऐसे में काशीनाथ सिंह ने सिद्दीकी साहब जैसे पात्र के माध्यम से समाज की विसंगतियों की पड़ताल करने की ठानी है और साथ ही इस सबके प्रति अपनी चिंता भी व्यक्त की है।

काशीनाथ सिंह ने ऐसे पात्रों को गड़ा है, जो समाज की गहराई तक पहुँच कर ऐसे सच का पता लगाना चाहते हैं, जिसकी वजह से सामाजिक व्यवस्था में उथल-पुथल मची हुई है। 'सिद्दीकी साहब' सच की तलाश में निकल पड़े हैं। इस बात की फिक्र किए बगैर कि समाज उन्हें 'सनकी' मान चुका है। इसके बावजूद सिद्दीकी साहब के आँकड़े दिमाग पर असर डालने के लिए पर्याप्त हैं-'सिद्दीकी के आँकड़े बताते हैं कि "मामले आगजनी के हों या बलात्कार के, राहजनी के हों या लूटपाट के, ठगी के हों या हत्या के, उन्हें गौर से देखो तो पाओगे कि गरीब से टकरा रहा है, खाता-पीता खाते-पीतों से टकरा रहा है, जाति से टकरा रही है, धर्म मजहब से टकरा रहा है, लेकिन एक भी दौलतमंद दूसरे दौलतमंद से नहीं टकरा रहा है।"[9] यदि सिद्दीकी साहब के आंकड़ों की पड़ताल की जाए तो यह बात सौ फीसदी सही साबित होती है। एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण हो चुका है, जिसमें लोग आपस में टकरा रहे हैं और सबसे ज्यादा आम लोग आपस में टकरा रहे हैं और दौलतमंद लोग इसका भरपूर मजा उठा रहें हैं।

काशीनाथ सिंह के पुरुष पात्रों में समाज की चिंता व्याप्त नजर आती है। लोग अब उन्हें पागल घोषित कर चुके हैं अर्थात् लेखक का इशारा साफ है कि आज के समय में अपना सब काम छोड़कर समाज की चिंता करने वाले, सच का पक्ष लेने वाले को लोग कोई महत्व नहीं देते हैं। इसके बाद भी वह युवा-सच को जानने के लिए इश्तहार बनाता है, जिसमें लिखा था-"सव उसके और नीचे था-मेरे लाल! तुम कहाँ हो? किससे नाराज हो? अब तो आ जाओ। कोई कुछ नहीं कहेगा!"[10] परन्तु उस सच की खोज करते-करते सिद्दीकी आज खुद लापता हैं। कहना न होगा कि हमारे समाज में सच कहने- जानने वालों को या तो पागल कहा जाता है

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

या उन्हें सदा के लिए संसार से लुप्त कर दिया जाता है। इसके बाद काशीनाथ सिंह के शिक्षित पात्रों में 'जादू' और 'ज्यान' जैसे पात्र आते हैं। वे समाज में व्याप्त विषमताओं पर चिंता व्यक्त करते हुए समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को लेकर गंभीर हैं। वास्तविकता यह है कि हमारे समाज का पड़ा-लिखा तबका अपनी किंकर्तव्यविमूढ़ता से ग्रस्त है। यह वर्ग चाह कर भी कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं है।

हमारे देश की आजादी के बाद राजनीति का स्वरूप भी बदला है और सन् 1960 के बाद तो कुछ ज्यादा ही बदलाव दिखाई पड़ते हैं। सन् 1962 में जहाँ भारत-चीन युद्ध का बिगुल बजता है, वहीं सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान की लड़ाई के परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश के रूप में अस्तित्व में आता है। तत्पश्चात्, 1972-73 के आपातकाल का दौर प्रारंभ होता है और फिर 1984 में इंदिरा गाँधी की हत्या उन्हीं के अंगरक्षकों के द्वारा कर दी जाती है। घटनाएं इतनी तेज़ी से घटती हैं कि बदलती हुई स्थितियों को समझने में रचनाकार को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जिस स्वतंत्र भारत का सपना हम भारतवासी देख रहे थे, अब वह ध्वस्त हो रहा था। यह वही समय था जब पंचवर्षीय योजनाएं असफल हो रही थी, आर्थिक अवस्था चरमरा रही थी, बेरोजगारी की समस्या अपना दायरा सुरसा की तरह विकराल बनाती जा रही थी और लोग रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ पलायन कर रहे थे। सत्ता से आम जनता का विश्वास उठ-सा गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि साहित्य में भी बदलाव आया और ऐसा होना स्वाभाविक भी था क्योंकि इसके पहले साहित्य में एक ठहराव-सा आ गया था। ऐसे में जब इस दौर के रचनाकार अपनी कलम उठाते हैं तो उनका स्वर राजनीति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की जाँच करता है। फलतः वे अपने पात्रों के मुँह से वह बात कहलवाते हैं, जो हमारे समय की माँग है।

सुधीर (सुधीर घोषाल), जादू (लाल किले के बाज), ज्यान (अधूरा आदमी) आदि जैसे पात्रों की विचारधारा राजनीति से ओत-प्रोत हैं। 'सुधीर घोपाल' शीर्षक कहानी काशीनाथ सिंह की सर्वाधिक चर्चित कहानियों में से एक है। यह नक्सलवादी आंदोलन से प्रभावित कहानी है। कहानी का पात्र सुधीर, जो एक कोयला मजदूर है, कभी सिंगरेनी (दक्षिण) नहीं गया। लेकिन वहाँ के मजदूरों पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए वह 'वेस्ट इंडिया कोल कंपनी एंड लिमिटेड' की बिहार शाखा के प्रशासक के यहाँ अपनी पहचान जरूर क़ायम करता है।

निष्कर्ष

काशीनाथ के कथा साहित्य का अध्ययन कर हम यह कह सकते है कि काशीनाथ सिंह ने अपने पात्रों के माध्यम से हमारे समाज का सच व्यक्त किया है। उन्होंने समाजशास्त्रीय दृष्टि से अपने पात्र गढ़े हैं। काशीनाथ सिंह का कथा-साहित्य अपने समय के सच को रचना में बंद नहीं करता, वरन् वह उसे मुक्त कर देता है। ऐसे में उनका पाठक अपने समय पर सोचने-विचारने के लिए बाध्य होता है। उन्होंने अपने समय और भूगोल को सिरजने के क्रम में धर्म, राजनीति, संस्कृति और समाज की अपनी रचनाओं में बहुत बारीक पड़ताल की है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2006, पृष्ठ संख्या-11
2. सिंह, काशीनाथ, गपोड़ी से गपशप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण-2013, पृष्ठ संख्या-21
3. प्रफुल्ल कोलख्यान, कथा-कथांतर और कथोपरांत काशी का अस्सी, पृष्ठ संख्या-5
4. प्रकाश, उदय, आदमीनामा में आदमी, काशी पर कहन, सं-मनीष दूबे, वर्षा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2005, पृष्ठ संख्या- 323
5. सिंह, काशीनाथ, कहनी उपखान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2003, पृष्ठ संख्या-97
6. सिंह, कामेश्वर प्रसाद (अतिथि सं.), संबोधन, अंक-1-2, अक्टूबर-2012, जनवरी-2013, पृष्ठ संख्या-61
7. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2006, पृष्ठ संख्या-132
8. सिंह, काशीनाथ, कहनी उपखान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2003, पृष्ठ संख्या-233
9. उपरिवत्, पृष्ठ संख्या-237
10. उपरिवत्, पृष्ठ संख्या-236